एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 05 (सितंबर-अक्टूबर, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

पोलीहाउस में कार्नेशन की खेती

(*मुरारी लाल चोपड़ा)
उद्यान विभाग, श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय, जोबनेर, जयपुर
*संवादी लेखक का ईमेल पता: chopragoutam56@gmail.com

कार्नेशन एक आकर्षक व्यावसायिक पुष्प है। यह कैरियोफाइलेसी कुल का सदस्य है। इसका वानस्पतिक नाम डायन्थस कैरियोफिलस है। कार्नेशन का उत्पत्ति स्थल दक्षिण फ्रांस माना जाता है। इसको 'डिविन् फ्लॉवर' के नाम से जाना जाता है। इसके पुष्प की सुगन्ध, विभिन्न रंग, कम वजन एवं अधिक दिनों तक तरोताजा बने रहने के कारण मुख्य दस कर्तित पुष्पों में इसका स्थान है। कार्नेशन की खेती बिना पोलीहाउस के भी की जा सकती हें । परन्तु खुले स्थान पर कार्नेशन लगाने पर पोधो की अच्छी वृद्धि नहीं हो पाती जिसके परिणामस्वरूप फूलो की गुणवता पर असर पडता हें, और बाजार में अच्छा मूल्य नहीं मिल पाता हें । अत अच्छी गुणवता के फूल लेने के लिए कार्नेशन को पोलीहाउस/ग्रीनहाउस में ही उगाना चाहिए। पोलीहाउस एक विशिष्ट आकार की सरंचना होती हें, जिसको 200 से 400 माइक्रोन मोटाई वाली पराबैंगनी विकिरणों से अवरोधी, सफेद रंग की पारदर्शी प्लास्टिक चादर से ढका जाता हें । कम क्षेत्रफल में अधिकतम लाभ कमाने के लिए यह एक उतम तकनीक हें । हालांकि इसमे प्रारम्भिक खर्च अधिक लगता हें । परन्तु भारत सरकार तथा राज्य सरकारों द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओ का लाभ भी इसमे मिलता हें । ग्रीनहाउस में फूलों के उत्पादन की तकनिक भारत के लिए नई हें । इसी कारण सभी इकाईयों को होलैंड, इजराईल तथा अन्य देशो के सहयोग से चलया गया हें ।

पोलीहाउस के फायदे

- पोलीहाउस में इच्छित वातावरण बनाकर सभी तरह के फूल पुरे वर्षभर पैदा किये जा सकते हें ।
- किसी भी फूल वाली फसल को किसी भी स्थान पर, किसी भी मोसम में पैदा किया जा सकता हें ।
- पोलीहाउस में अच्छे गुणवता युक्त फूल पैदा किये जा सकते हें । इसलिए पोलीहाउस में पैदा किये गए फूल निर्यात के लिए ज्यादा उपयुक्त होते हें ।
- जिन क्षेत्रों में परंपरागत खेती नहीं की जा सकती, उनमे पोलीहाउस की मदद से फूल पैदा करने की संभावनाए बढ़ जाती हें ।
- शहरी एवम् सीमांत किसानों के लिए लाभकारी हें ।
- फसलों में लगने वाले कीट व् बीमारियों की आसानी से सुरक्षा होती हें ।
- प्रति इकाई क्षेत्र में अधिक उत्पादन होता हें ।

पोलीहाउस की कुछ सीमाये

- पोलीहाउस बनवाने में किसानों को प्रारम्भ में ज्यादा पूंजी लगानी पड़ती हें ।
- यह केवल व्यासायिक एवम् बागवानी फसलों के लिए ज्यादा उपयोगी हें । दूसरी फसलों के लिए नहीं ।

जलवायु

कारनेशन की अच्छी वृद्धि, विकास और फूल उत्पादन के लिए दिन का तापमान 20 से 25 डिग्री सेल्सियस और रात का तापमान 10 से 15 डिग्री सेल्सियस रहना चहिये। पोलीहाउस में 50-60 प्रतिशत की आपेक्षिक आद्रता अच्छे पुष्प उत्पादन के लिए जरूरी हें । तथा कार्बन डाईआक्साइड का स्तर 500 से 1500 पी. पी. एॅम बना रहना चहिये ।

कारनेशन के प्रकार एवं किस्म

(1) स्टैंडर्ड कारनेशन: इसके फूल बड़े आकार के और मजबूत लम्बी टहनियों पर खिलते हैं। गर्म जलवायु में बीमारियाँ लगने की संभावना रहती है।

लाल: मास्टर, किलर, ग्रैन्डा, रेड विलियम, टॉगा, स्कैनिया, इम्पाला।

पीला: रागीओ दी सोल, पैलास, मुरसिया, ताहिती।

गुलाबी: लीना, शारिना, पिंक सिम, कैडी, ओरियाना, नुरा, कैस्टेलेरो, मेनोन, क्लेयोप्सो, पाओला।

सफेद: वाइट सिम, रोमा, कैन्डी वाइट, सोनसारा।

अन्य: सोलर, सन्टीगो, चारमर, टोलिडो, जिमाइका।

(2) स्प्रे कारनेशन: इसके फूल ज्यादा संख्या में छोटे-छोटे खिलते हैं तथा गर्म जलवायु में भी अच्छे खिलते हैं।

लाल: रॉनी, कर्मा, इन्जो, इटना।

गुलाबी: करीना, मैलेडी, सिल्वर पिंक, बारब्रा, एनीलीस, मेडिया, नेटाली।

पीला: येल्लो ओडिओन, एलिसिटा, लियोर, कारटाउच।

सफेद: आइस लैण्ड, एक्सेल, टिब्ट, वाइट रॉयल्टी।

अन्य: किसी, लुना, मिराजी, माकारीना, स्कारलेट, इक्विस्टी।

प्रवर्धन: कारनेशन का प्रसारण बीज और तना कर्त्तन द्वारा किया जाता है:

(1) बीज: कारनेशन के बीज को सीड वेड में डाल कर पौधा तैयार किया जाता है। इसके बीज 5 से 10 दिनों में अंकुर जाते हैं और 20-30 दिनों में पौधे तैयार हो जाते हैं। अंकुरण के लिए 210 सें. तापमान अच्छा होता है। सीड वेड में बालू, केचुआ खाद (1:1) का मिश्रण अच्छा होता है। बीजों को पत्ती से ढँकने से अंकुरण अच्छा होता है।

(2) तना कर्त्तन: 10-12 सें.मी. के तनों के अग्र भाग से कटिंग लेकर 500 पी पी एम के इन्डोल ब्युटारिक एसिड के घोल से उपचारित कर उसे बालू, केचुआ खाद, मॉस घास के मिश्रण वाले बेड में लगा दिया जाता है। एक महीने बाद अच्छी जड़ें निकल कर पौधे तैयार हो जाता हैं। कटिंग लगाने का सही समय फरवरी-मार्च का महीना होता है।

पौधा लगाना

कारनेशन के पौधे को बाजार और सुन्दरता की दृष्टि से सितम्बर माह से अप्रैल माह तक लगाना चाहिए। इसके पौधे को ज्यादा गहराई पर नहीं लगाना चाहिए, नहीं तो जड़ सड़न रोग लगने की संभावना रहती है। कारनेशन को 15-20 सें.मी. पौधा से पौधा और कतार से कतार की दूरी पर लगाना चाहिए। अधिकतर 25-32 पौधे प्रति वर्ग मीटर क्षेत्र में लगाए जाते हैं।

सिंचाई

गर्मियों में 2-3 दिन बाद, जाड़े में 4-5 दिन बाद तथा वर्षा ऋतु में आवश्यकता अनुसार सिंचाई करनी चाहिए। ड्रिप (टपका) सिंचाई प्रणाली एक नवीन पद्धति हें, टपका विधि द्वारा पोधो को बूंद – बूंद के रूप में पोधे की जड़ क्षेत्र में उपलब्ध कराया जा सकता हें। ड्रिप विधि से जल के साथ – साथ उवर्रक, कीटनाशक व अन्य घुलनशिल रसायनिक तत्वों को भी सीधे पोधो तक पहुँचाया जा सकता हें ।

पौधे का सहारा

7.5 x 7.5 सेमी आकार का पहला जाल जमीन से 10 सेमी ऊपर बंधा हुआ; 20 सेमी ऊंचाई पर 15 x 15 सेमी का दूसरा जाल; 30 सेमी ऊंचाई पर 20 x 20 सेमी का तीसरा जाल। फसलों के लिए सामान्यतः 4-6 जालियों की आवश्यकता होती है।

पिन्चिंग

पिन्चिंग क्रिया में पौधे और फूलों को काटते हैं जिससे कि पौधे का विकास ज्यादा हो और अच्छे फूल खिलें। साधारणत: 20-30 बार पौधों में पिंचिंग करते हैं। जमीन से 6 गाँठे छोड़ कर पौधे को काट देते हैं, जिससे ज्यादा शाखाएँ निकल कर पौधे घने हो जाते हैं और ज्यादा फूल खलते हैं।

फूलो की कटाई

कटाई की उपयुक्त अवस्था का ज्ञान होना बहुत ही आवश्यक हें । फूल अतिशिघ्र नाशवान प्रकृति के होते हें अत: इनकी कटाई या तो जल्दी सुबह या फिर देर शाम के समय, जब तापमान कम हो, करनी चहिये।

उपज

खुली जगहों में खेती करने से प्रति वर्ग मीटर 150-200 फूल तथा ग्रीन हाउस में प्रति वर्ग मीटर 300-400 फूल प्राप्त होते है। पौधा लगाने के बाद लगभग 150-180 दिनों बाद फूल खिलने प्रारम्भ होते हैं। ग्रीन हाउस में 120-150 दिनों बाद फूल खिलना शुरू होता है।

रोग एवं रोकथाम

(1) मुर्झा: यह रोग मिट्टी जनित रोग है जिसमें पौधा पीला होकर सूख जाता है। इसकी रोकथाम के लिए कॉपर ऑक्सिक्लोराइट दवा 8 ग्राम/ली. पानी में घोल कर जमीन को तर कर देना चाहिए तथा पौधे पर वेविस्टीन दवा का 2 ग्राम/ली. पानी में घोल बना कर छिड़काव करना चाहिए।

(2) तना सड़न: जमीन से सटे तने सड़ने लगते हैं और पौधा झुक जाता है। इसकी रोकथाम के लिए कॉपर ऑक्सिक्लोराइट दवा 4 ग्राम/ली. पानी में घोल कर जमीन को तर करना चाहिए।

(3) रस्ट: इस रोग में पत्तियों के ऊपर काले-भूरे रंग के दाग दिखाई देते हैं। फिर ये दाग तनों और फूलों पर भी बढ़ जाते हैं। इस रोग की रोकथाम के लिए वेवस्टीन दवा 2 ग्राम/ली. पानी में घोल कर या डायथेन एम-45 दवा 3 ग्राम

प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए।

(4) पर्ण दाग: जब मौसम का तापमान 23-8^0 सें. से बढ़ने लगता है तथा आर्द्रता अधिक होती है तो पत्तियों पर काले दाग दिखाई देते हैं। इस रोग की रोकथाम के लिए वेवस्टीन 2 ग्राम या डायथेन एम-45 दवा 2-3 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए।

कीट एवं रोकथाम

(1) माहू या ऐफिड: यह कीट कारनेशन में सबसे ज्यादा नुकसान पहुँचाता है। रस चूस कर पौधे को कमजोर करने के साथ-साथ वायरस भी फैलाता है। इस कीट की रोकथाम के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल दवा का 0.1 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए।

(2) थ्रिप्स: यह नन्हा कीट पौधे का रस चूस कर नुकसान पहुँचाता है। इसकी रोकथाम के लिए मैलाथियान दवा का 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिए।

(3) निमेटोड: यह कीट पौधे की जड़ में रह कर गाठें बना देता है जिससे पौधा मिट्टी से पानी और पोषक तत्व नहीं ले पाता है और पौधा कमजोर हो जाता है। फूराडान या एल्डिकार्व दानेदार दवा 2-3 ग्राम प्रति वर्ग मीटर की दर से मिट्टी में मिलानी चाहिए।